“विक्रमशिला”

Mandip kumar Chaurasiya

Assistant Professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

M.A. Semester - III

Paper/CC – 12 (Historiography, History of Bihar and Research Methodology)

विक्रमशिला बिहार प्रान्त के भागलपुर जिले में स्थित है| यह महाविहार नालंदा के समान ही एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यति का शिक्षा का केंद्र रहा है| इसकी स्थिति भागलपुर से 24 मील पूर्व की ओर पथरघाट नामक पहाड़ी पर बताई गई है जहाँ से प्राचीन काल के विस्तृत खण्डहर प्राप्त होते है|

पाल नरेश धर्मपाल (775-800 ई०) ने विक्रमशिला महाविहार की स्थापना की थी| उसने यहाँ मन्दिर तथा मठ बनवाये और उन्हें उदारतापूर्वक अनुदान दिया| यहाँ 160 विहार तथा व्याख्यान के लिए अनेक कक्ष बने हुए थे| धर्मपाल के बाद इसके उत्तराधिकारियों ने तेरहवीं शती तक इसे राजकीय संरक्षण प्रदान करते रहे| जिसके परिणामस्वरूप

विक्रमशिला लगभग चार शताब्दियों से अधिक समय तक अंतर्राष्ट्रीय ख्यति का विश्वविधालय बना रहा|

विक्रमशिला विश्वविद्यालय में छः महाविद्यालय थे| प्रत्येक में एक केंद्रीय कक्ष तथा 108 अध्यापक थे| केंद्रीय कक्ष को 'विज्ञान भवन' कहा जाता था| प्रत्येक महाविद्यालय में एक प्रवेश द्वार होता था तथा प्रत्येक प्रवेश द्वार पर एक-एक द्वार पंडित बैठता था| महाविद्यालय में प्रवेश के लिए वहाँ स्थित द्वारपंडित के परिक्षण के उपरान्त ही विधार्थी का प्रवेश संभव होता था| इसके अंतर्गत हमें निम्नलिखित द्वारपंडितों के नाम मिलते है -

1. पूर्व द्वार - आचार्य रत्नाकर शान्ति
2. पश्चिम द्वार - वागीश्वर कीर्ति
3. उत्तर द्वार - नारोप
4. दक्षिण द्वार - प्रज्ञाकरमती
5. प्रथम केंद्रीय द्वार- रत्नवज्र
6. द्वितीय केंद्रीय द्वार- ज्ञानश्रीमित्र

विक्रमशिला विश्वविधालय में महत्वपूर्ण विषयों जैसे- व्याकरण, तर्कशास्त्र, तंत्र, विधिवाद, मीमांसा आदि का अध्ययन होता था| हम देखते है कि इस विश्वविधालय का नालन्दा विश्वविधालय जैसा विस्तृत पाठ्यक्रम नहीं था| यहाँ के आचार्यों में सर्वाधिक उल्लेखनीय आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान थे जो इस विश्वविधालय के कुलपति थे| तिब्बती स्रोतों

में उन्हें दो सौ ग्रंथो की रचना का श्रेय दिया गया है| अन्य विद्वानों में वैरोचन, रत्नाकर, शांति, ज्ञानश्री, रत्नवज्र, ज्ञानपाद, रक्षित, जेतरी, तथागत आदि के नाम प्रसिद्ध है| बारहवीं शती में लगभग तीन हजार विधार्थी यहाँ शिक्षा ग्रहण करते थे| इनमे से अधिकांश तिब्बत के थे| यहाँ पर तिब्बती छात्रों के आवास के लिए एक विशिष्ट अतिथि गृह भी बनाया गया था| इस विश्वविधालय में एक विशाल पुस्तकालय भी था| विश्वविधालय को चलाने के लिए एक संघाध्यक्ष की देख रेख में एक परिषद् थी| ये परिषद् विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी प्रकार के कार्यों की देख रेख करती थी| तारानाथ के विवरण से ज्ञात होता है कि पाल शासक नालन्दा विश्वविधालय का कार्यों की देखभाल के लिए विक्रमशिला के आचार्यों को नियुक्त किया करते थे| यहाँ के स्नातकों को अध्ययन के उपरान्त इन्हें पाल शासको के द्वारा उपाधियाँ प्रदान की जाती थी| स्नातकों को पण्डित की उपाधि दी जाति थी| महापण्डित, उपाध्याय तथा आचार्य क्रमशः उच्चतर उपाधियाँ थी|

इस प्रकार विक्रमशिला विश्वविधालय ग्यारहवीं-बारहवीं शती में भारत का सर्वाधिक सम्पन्न, प्रतिष्टित विश्वविधालय था| इस विश्वविधालय के प्रमुख आचार्य दीपंकर सहित अनेक विद्वान तिब्बत गए, जहाँ उन्होंने बौद्ध धर्म प्रचार-प्रसार किया| इस प्रकार यहाँ के आचार्यों ने भारतीय ज्ञान विज्ञान को पूरी अन्तराष्ट्रीय जगत में प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की|

मुस्लिम आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने 1203 ई० में विक्रमशिला विश्वविधालय को दुर्ग के भ्रम में ध्वस्त कर दिया| उसने सभी भिक्षुओं की सामूहिक हत्या करवा दी थी तथा वहाँ के ग्रंथो को जला दिया| इस समय विश्वविधालय के कुलपति शाक्यश्रीभद्र अपने कुछ अनुयायियों के साथ किसी प्रकार जान बचाकर तिब्बत भाग गए|

इस प्रकार हम देखते है कि किस प्रकार से भारत के इस गौरवशाली अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविधालय का दुखद अंत हो गया|